eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 01, January 2025

बाबा भीमराव अम्बेडकर के विचारों का दलित समाज के उत्थान पर प्रभाव

सुमन[1]
[1]शोध छात्रा इतिहास विभाग गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर

Received: 20 January 2025 Accepted & Reviewed: 25 January 2025, Published: 31 January 2025

Abstract

इसमें बाबा भीमराव अम्बेडकर द्वारा चलाए गए आंदोलन और उनके दलितों के उत्थान से जुड़े विचार उल्लिखित है। बाबा साहब ने दलितों के मसीहा के रूप में दलित समाज को आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण का रास्ता दिखाया संविधान में आरक्षण की व्यवस्था करके उस समुदाय को बिना डर भय के आगे बढ़ने का संदेश दिया। बहुसंख्यक लोग यही जानते है कि बाबा साहब भारतीय संविधान के निर्माता प्रभावशाली वक्ता कानून के जानकारी और एक महान चिंतक थे परंतु ज्यादा लोग यह नहीं जानते हैं कि डॉक्टर अंबेडकर अर्थशास्त्री भी थे और अपने ज्ञान के जरिए उन्होंने अपने समाज को सामाजिक आर्थिक राजनीतिक सांस्कृतिक रूप से आगे बढ़ाने की महती कोशिश किया उनके त्याग और विश्वास का ही प्रतिफल रहा कि आज दलित समाज के लोग समाज में सम्मान से जीवनयापन करते है। बाबा साहब को विश्वास था कि पढ़ लिख करके ही दलित समाज का उत्थान हो सकता है। इसलिए उन्होंने दलितों को एक समय भोजन भले ही कम करो लेकिन अपनी संतानों को शिक्षा से सुदृढ़ करने का आदेश दिया और उनके अनुयायियों ने उनके मुख से निकली बातों को ह्रदय में स्थान दिया और शिक्षा से सशक्तिकरण के उद्देश्य को लेकर आगे बढ़े बाबा साहब ने शिक्षा को आर्थिक शक्ति का आधार माना और सभी प्रकार के दोषों को जीवन से निकल फेंकने का प्रयास किया यहाँ तक कि जिस धर्म में सम्मान न मिले उस धर्म में रहना ही क्यों के प्रश्न का लेकर एक नए धर्म का रास्ता अपना लिया जिसे नवयान या नवबौद्ध कहा गया बाबा भीमराव अंबेडकर ने अपने विचारों और सिद्धांतों द्वारा दलितों को जीवन जीने की सही राह की तरफ अग्रसर किया इसके लिए पूरा दलित समाज सदैव उनका आभारी रहेगा।

शब्द कुंजी– वैदिक धर्म,अस्पृश्यता, तिरस्कार, दलित, पुरुषसूक्त, चतुर्वर्ण व्यवस्था,आरक्षण, स्वराज्य, धम्म, प्रज्ञा, करुणा, धर्मांतरण, बुद्धिवाद, सशक्तिकरण, स्वतंत्रता, सवर्ण।

Introduction

प्राचीन काल से ही दलितों की स्थिति भारतीय समाज मे अत्यंत दयनीय रही है वैदिक धर्म ग्रंथो में माना गया है कि मनुष्यों की उत्पत्ति ब्रह्मा के विभिन्न अंगों से हुई है और इसमें बताया गया कि शूद्रों की उत्पत्ति ब्रह्मा के चरणों से हुई है इसलिए इनको ब्राह्मण क्षत्रिय वणिक वर्ण की सेवा की जिम्मेदारी दी गई इस तरह देखा जाए तो वर्ण व्यवस्था क्रम मे सबसे निचले पावदान पर खड़े होने के कारण अस्पृश्य मानकर उन्हें सभी धार्मिक और सामाजिक समानता से वंचित कर दिया गया, इनके लिए सार्वजनिक स्थलों, धार्मिक स्थानों को निषिद्ध कर दिया गया, यहां तक की पुरुषसूक्त में भी चतुर्वर्ण का उल्लेख हुआ है इस तरह प्राचीन धर्म ग्रंथो में उल्लिखित दायित्वों की वजह से इन्होंने सामाजिक तिरस्कारो को अपनी नियति मान लिया लेकिन ये स्थिति नियति को भी मंजूर नही थी और भारत देश में दलित जाति मे जन्म हुआ एक महान विचारक का..... बाबा भीम राव अम्बेडकर जिन्होंने न केवल दलितों के हितों के लिए आजीवन संघर्ष किया बल्कि देश की आजादी में अपना अमूल्य योगदान दिया और संविधान की रचना किया बल्कि दलितों

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 01, January 2025

को सशक्त करने के लिए आंदोलन चलाया अछूत निवारण कानून लाकर उन्हे राज्य का संरक्षण किया, और अपने लेखन के द्वारा समाज को जागरण करने में महान योगदान किया, बाबा साहब के साहित्य मे दलित उत्थान की भावना सर्वत्र दिखाई देती है, बाबा साहब ने अपने जीवन काल मे अनेक पुस्तकों की रचना किया और इन पुस्तकों मे बाबा साहब से देश, समाज के सामने आये उनके विचारों का ही प्रभाव है कि आज भी विद्वानों द्वारा उनकी पुस्तकों का न केवल अध्ययन किया जाता है बल्कि अपनी लेखों मे, पुस्तकों मे बाबा साहब के विचारों को स्थान देकर स्वयं को गौरव की अनुभूति की जाती है।

शोध उद्देश्य – बाबा साहब के विचारों और उनके जीवन के संघर्षों से उपजे उनके क्रांतिकारी विचारों के बारे में जानना इसका उद्देश्य है कि किस तरह बाबा साहब ने न केवल उन्हें बुराईयों और तिरस्कारों से संघर्ष करना सिखाया बल्कि देश के संविधान में उनके लिए विशेष प्रावधान किया इसकी के बारे में अध्ययन में जानने की कोशिश की गई है।

शोध प्रविधि– बाबा साहब का दलितों के उत्थान में योगदान के अध्ययन के लिए उनकी रचनाओं में निहित विचारों का सूक्ष्म अध्ययन किया गया है साथ ही तत्कालीन समय के दस्तावेजों के अध्ययन द्वारा दलित समाज के प्रति उनके समर्पण और उनके विकास के लिए उनके प्रयासों के बारे में जानकारी जुटाई गई है प्रस्तुत अध्ययन में तार्किक एवं क्रमबद्ध विधियों आगमनात्मक विधि, निगमनात्मक विधि, सामान्यीकरण, व्याख्या, युक्तिकरण आदि का प्रयोग किया गया है।

साहित्यवलोकन– जैसा कि सभी विद्वानों को मालूम है, बाबा भीम राव अम्बेडकर का जन्म राम जी मालो जी सकपाल और भीमाबाई की चौदहवीं संतान के रूप मे 14 अप्रैल 1891 को महु (इंदौर) में एक महार जाति (शुद्र) में हुआ था जो मूल रूप से महाराष्ट्र के मराठवाड़ा क्षेत्र से थे, दलित परिवार मे जन्म लेने की वजह से उन्हे सामाजिक भेदभाव का सामना करना पड़ा क्योकि शुद्र को अछूत माना जाता था और अस्पृश्यता की भावना लोगों के सामाजिक ,मानसिक जीवन को दूषित कर रही थी, बाबा साहब को बालक जीवन से लेकर अपने समाज का ही नही बल्कि देश का बुद्धजीवी युवा होने के वावजूद सामाजिक तिरस्कार का सामना करना पड़ा जो कि उनके जैसे तीव्र बुद्धि, तर्कशील, चेतना सम्पन्न, जागरूक युवक के लिए असहनीय था। दलित ,पीड़ित, वंचितों की स्थिति देखकर वे उनके अधिकारों के लिए उठ खड़े हुए, वो चाहते तो किसी भी देश मे अपनी प्रखर प्रतिभा के बल पर उच्चतम स्थान प्राप्त करके वैभवशाली जीवन व्यतीत कर सकते थे लेकिन उन्होंने अपने देश के लिए, समाज के लिए अपना जीवन समर्पण कर दिया,उन्होंने एक बार बम्बई मे कहा भी था "जहाँ मेरे व्यक्तिगत हित और देश के हित मे टकराव होगा, वहाँ मै, देश के हित को प्राथमिकता दूँगा लेकिन जहाँ दलित जाति के हित और देश के हित के बीच टकराव होगा, वहाँ मै दलित जाति को प्राथमिकता दूँगा "यही वो महत्वपूर्ण बात है जब वो दो रूपों मे सामने आते है, एक दलितो के मसीहा के रूप मे उन्होंने अछूतोद्वार का महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न किया वही दूसरी ओर महान कानून जानकार के रूप मे उन्होंने भारत के संविधान निर्माण का कठिन कार्य सम्पन्न किया इसलिए उन्हे आधुनिक युग का मनु कहा जाता है, बाबा साहेब का विचार उनके साहित्य मे स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, उन्होंने अपने जीवन काल मे बहुत सारी पुस्तकों को लिखा, दलितों का हित उनके लिए सबसे ज्यादा जरूरी था इसलिए उन्होंने दलित वर्ग के लिए आरक्षण की माँग रखी और स्पष्ट शब्दो मे कहा कि दलितों की स्थिति सुधारे बिना स्वराज्य का कोई अर्थ नही है देखा जाय तो इसी समय उन्होंने ब्राहमण सर्वोच्चता का खुलकर विरोध किया, उनकी एक पत्रिकाओ के माध्यम से, दलितों में संघर्ष का भाव

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 01, January 2025

जगाया और बताया कि बिना शक्ति और ज्ञान के दलितों के आगे बढ़ने के सारे मार्ग बन्द है, बाबा साहेब ने अनेक पुस्तकों की रचना किया जिसमे प्रमुख है भगवान बुद्ध और उनका धम्म, मै अंबेडकर बोल रहा हु, शुद्र कौन थे, जाति का विनाश, कांग्रेस और गांधी ने अछूतों के लिए क्या किया, श्री गांधी और अछूतों की विमुक्ति, बहिस्कृत भारत (साप्ताहिक पत्रिका) जनता (साप्ताहिक पत्रिका), इन पुस्तकों और पत्रिकाओं मे बाबा साहेब भीम राव अम्बेडकर ने दलितों की स्थिति सुधारने सम्बंधी विचार व्यक्त किया साथ ही अपने विचारों को आंदोलन के जरिये समाज सुधार का माध्यम बना दिया, अपनी पुस्तक जाति का विनाश मे अंबेडकर ने कहा कि भारत मे समाज सुधार की राह कठिनाईयों से भरी हुई है।

यहाँ पर समाज सुधार के सहयोगी कम और आलोचक ज्यादा है। अपनी इसी पुस्तक मे वो सवर्ण हिंदुओ द्वारा दलित जातियों पर किये गये अत्याचारों का जिक्र किया है, इसके अलावा 1 अप्रैल 1936 के आस पास जयपुर रियासत के चकवारा गाँव की घटना का उल्लेख किया है। जिसमे तीर्थयात्रा से लौटे अछूत परिवार ने धार्मिक भोज का निमंत्रण दिया खाने मे घी पड़ा हुआ था अभी भोज चल ही रहा होता है कि सवर्ण हिंदुओ ने अछूतों की पिटाई कर दिया कारण अछूतों का घी युक्त भोजन करना जिसे सवर्ण अपनी सामाजिक हैसियत का प्रतीक मानते थे अतः वो चाहते थे कि दलित आर्थिक समाजिक शैक्षिक और धार्मिक रूप से शक्तिशाली बने तभी दलितों को सम्मानपूर्वक जीवन जीने को मिलेगा, आगे अपनी पुस्तक भगवान बुद्ध और उनका धम्म मे उन्होंने कहा है कि धर्म तभी सद्धर्म है जब वह आदमी और आदमी के बीच समानता के भाव की अभिबृद्धि करे, सभी को जीवन मे संघर्ष करना पड़ता है, और इस जीवन संघर्ष मे यदि असमानता की स्थिति स्वीकार कर ली जाए तो जो कमजोर है तो वो हमेशा के लिए वही रह जायेगा महात्मा बुद्ध ने इसी संदर्भ मे कहा था कि जो धर्म समानता का समर्थक नही है वह स्वीकार करने योग्य नही है वास्तव में महात्मा बुद्ध का धम्म आदमी के पुण्य को जन्म देने वाला अत्यंत न्याय संगत धर्म है, अपनी इस पुस्तक मे उन्होंने धम्म क्या है और धम्म की विशिष्टताओं का उल्लेख किया और बताया कि वास्तव मे धम्म को ऐसा ही होना चाहिए जिसमे प्रज्ञा,करुणा समानता हो बाबा साहब मानते थे कि धम्म एक सामाजिक वस्तु है वास्तव मे वो धम्म को सदाचरण मानते थे इसका अर्थ था कि सभी व्यक्ति एक दूसरे से अच्छा व्यवहार करे, चूंकि दलित वंचित पीड़ित व्यक्ति के साथ तिरस्कारपूर्ण व्यवहार किया जाता था लेकिन अगर व्यक्ति ऐसे किसी धम्म को अपना ले तो किसी के साथ बुरा व्यवहार नही कर सकता है जो कि उस समय दलितों को इसकी बड़ी आवश्यकता थी चूँकि इस धम्म मे प्रज्ञा और करुणा जैसी महान विशिष्टताएं जैसे दो प्रधान गुण थे जिसकी जरूरत तत्कालीन समाज को थी बिना प्रज्ञा और करुणा के समाज उन्नति नही कर सकता है प्रज्ञा का मतलब निर्मल बुद्घि से था प्रज्ञा सम्पन्न व्यक्ति मे अंध विश्वास से दूर रहता है और करुणा युक्त व्यक्ति समाज मे प्रेम स्नेह का केंद्र होता है लोक कल्याण की भावना से ही कोई समाज शक्तिशाली बन सकता है और परोपकार की भावना से युक्त व्यक्ति पाप कर्म से अलग हो जाता है और स्वतः ही शुद्ध हो जाता है प्रज्ञा युक्त व्यक्ति बुराईयों से दूर रहता है, सत्य का पालन करता है,किसी प्रकार का दुर्व्यसन करता न है न बुराइयों का समर्थन करता है क्योकि नशे मे व्यक्ति मतिभ्रम का शिकार हो जाता है और तब वो पाप कर्म करता है और दूसरों को पाप मे प्रवृत्त करते है इसलिए बाबा साहब दलित जातियों को पाप कर्म से दूर रहने की सलाह देते है ताकि न वो व्यसन मे हो और न किसी प्रकार की सामाजिक आर्थिक क्षति हो जिससे उनकी आर्थिक उन्नति सुनिश्चित होगी, बाबा साहब ने अपनी पत्रिका मूकनायक द्वारा भी दलितों को अपनी स्थिति सुधारने पर ध्यान केंद्रित करने को कहा और अस्पृश्य समाज मे विचारधारा के स्तर पर जागृति उत्पन्न करने की कोशिश किया मूकनायक पत्रिका से अस्पृश्य

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 01, January 2025

पत्रकारिता को नया आयाम मिला जो समाज युगों से समाज की मुख्य धारा से अलग थलग पड़ा था अब बाबा साहब ने अपने विचारों से समाज को उद्देलित कर दिया बाबा साहब अपने विचारों से दलित समाज के नेता के रूप मे उभर रहे थे जब भारत मे स्वतन्त्रता का आंदोलन चल रहा तब बाबा साहब को लगता था कि ऐसी स्वतन्त्रता किस काम की जिसमे दलितों वंचितों को अपना अधिकार न मिले समाज मे सम्मान से जीने, बाबा साहब के विचारों पर अनेक लेखकों ने पुस्तक और लेख लिखा जिससे दलितों की स्थिति और उन्हे कैसे इन हालातों से बाहर निकाला जा सकता है इस पर बाबा साहब के स्पष्ट विचार मिलते है।

बाबा साहब जानते थे कि जब तक हिंदू धर्म मे अस्पृश्य की भावना को खत्म नही किया जायेगा तब तक दलितों की स्थिति मे बदलाव की उम्मीद नही की जा सकती है और हिंदू धर्म मे सुधार की अवसर कम ही नजर आ रही थी इसलिए बाबा साहब ने धर्मांतरण की बात की, ये घोषणा ही हिंदू समाज पर एक बड़ा प्रहार था जो उसकी व्यवस्था के लिए चुनौती थी ऐसा नही था कि बाबा धर्मांतरण की बात बिना सोचे समझे कर रहे थे वास्तव मे इसके पीछे उनकी और उनके समाज की संघर्षो की लम्बी यात्रा थी धर्म परिवर्तन के पीछे उनकी वैचारिकता को समझने के लिए उनके कुछ लेखों पर ध्यान केंद्रित करना होगा जिसमे बाबा साहब कहते है हिंदू समाज मे कई कमियाँ है जैसे बाल विवाह की समस्या जो अविकसित, अल्पायु, निस्तेज संतान का जन्म होता है, जाति भेद की समस्या जिससे कभी कभी योग्य व्यक्ति को भी सार्वजनिक जीवन मे सही अवसर नहीं मिलता है इसके अलावा स्त्री और शुद्र के साथ निम्नतम स्तर का व्यवहार ये बुराईयां ऐसी है जो किसी भी समाज को पतन की ओर उन्मुख कर देगा बाबा साहब के धर्मांतरण घोषणा का महात्मा गांधी ने भी विरोध किया बाबा साहब ने महार सम्मेलन मे बोलते हुए कहा था कि धर्मांतरण करना कोई बच्चों का खेल नही है यह व्यक्ति के जीवन की सफलता का सवाल है इसलिए इस पर बहुत गम्भीरता से विचार किया जाना चाहिए आगे वो कहते है कि मै कहता हु इसलिए धर्म परिवर्तन न करिए यदि आपको समझ मे आता है तो धर्मांतरण करियेगा गौतम बुद्ध ने स्वयं कहा था कि आप स्वयं अपना आधार बनिये स्वयं की बुद्धि की शरण मे जाइये, आप किसी अन्य का उपदेश न सुनिये मत सुनिये, सत्य का आधार लिजिए, सत्य के शरणागत जाइये, , अपनी पुस्तकों कांग्रेस और गांधी ने दलितों के लिए क्या किया मे उन्होंने कांग्रेस और गांधी को दलित उपेक्षा के लिए दोषी माना, कई अवसर पर वो तीखे सवाल करते दिखाई पड़ते है कि आपकी इच्छा दलितों को सयुंक्त मताधिकार देने की नही थी, आप अनंतकाल से दबे कुचले दलितों को उनके अधिकार से रोकना चाहते है, वास्तव मे वो बाबा साहब के तीखे सवाल ही थे जिन्होंने गांधी जी को अस्पृश्यता निवारण के लिए आंदोलन करने को मजबूर कर दिया, और उन्होंने दलितों को हरिजन नाम दिया, मै अंबेडकर बोल रहा हु पुस्तक मे कहा गया है बुद्ध का धम्म परलोक के बारे मे नही बोलता है बल्कि उसका उद्देश्य इस संसार के बारे मे सम्बंधित है यह न स्वर्ग के बारे मे बताता है न नरक के बारे मे बात करता है यह धम्म व्यक्तिगत मुक्ति की नही बल्कि सामाजिक मुक्ति की संदेश देता है देखा जाय तो यह धम्म अपरिवर्तनवादी नही है यह धम्म वैचारिक है, बाबा साहब ने अपनी पुस्तक मे कहा था मैने बीस साल तक बौद्ध धर्म का अध्ययन किया है और बोल सकता हूँ कि बौद्ध धम्म अत्यंत तार्किक, वैज्ञानिक, आधुनिक दृष्टिकोण से श्रेष्ठ धम्म है, वर्तमान समय के परिप्रेक्ष मे यह धम्म ज्यादा उत्तम है इस धम्म मे बुद्धिवाद, स्वतंत्रता, जैसे तत्व दिखाई देते है बाबा साहब ने भारत के संविधान की रचना किया चूँकि वो भलीभाति जानते थे कि केवल शब्दों से या आंदोलनों से ही छुआछूत समाप्त नही किया जा सकता है बल्कि इसके लिए कड़े कानून भी होने चाहिए ताकि दण्ड का भय व्यक्ति

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 01, January 2025

को किसी के साथ अन्याय करने से रोकेगा इसलिए जब उन्हे संविधान निर्माण का अवसर मिला तो उन्होंने अछूतों की समस्या का कानूनी समाधान प्रस्तुत किया वो जानते थे कि हिंदू धर्म मे मौजूद वर्ण व्यवस्था मे अछूत समाज चारो तरफ से उच्च वर्णो से घिरा है जो निरंतर अछूत समाज पर अत्याचार कर रहे है और उसके लिए वो शर्मिंदा भी नही है इसलिए आवश्यक है कि राज्य ऐसे कानूनों से ससक्त रहे जिससे अछूतों को अपनी सुरक्षा महसूस हो बाबा साहब का मानना था कि अछूतों की समस्या का समाधान एक तरफ जहाँ कानून को ससक्त बनाकर किया जा सकता है वही दूसरी तरफ उन्हे शिक्षा द्वारा जागरूक बनाकर शैक्षिक आर्थिक सामाजिक राजनीतिक और धार्मिक दृष्टिकोण से उन्नति द्वारा अछूत समस्या का निवारण किया जा सकता है इस तरह देखा जाय तो बाबा साहब ने अपने लेखन मे दलितों के हितों के प्रश्न को प्रमुखता से उठाया, अपने आंदोलनों द्वारा दलितों में सशक्तिकरण की भावना जागृत किया उनकी प्रयासों का ही नतीजा था की संविधान मे छुआछूत निवारण सम्बंधी प्रावधान किये गए।

निष्कर्ष – दलित समाज के उत्थान में बाबा साहब का योगदान अविस्मरणीय है उन्होंने उस समाज के असमानतापूर्ण परिवेश में न केवल स्वयं को आगे बढ़ाया बल्कि अपने ज्ञान का उपयोग करके अपने समुदाय के हितों की रक्षा किया और आंदोलनों के द्वारा उनमें राजनीतिक समझ विकसित किया और दलित समाज के शैक्षिक विकास पर बल दिया और आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया, कोई उनके साथ असमानता का व्यवहार न करे। इसके लिए संविधान द्वारा उन्हें संरक्षण दिया ताकि कोई भी वर्ग न तो दलितों का तिरस्कार कर सके और न ही किसी भी प्रकार से शोषण।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1– 'द बुद्ध एंड हिज धम्म' लेखक बाबा भीम राव अम्बेडकर, अनुवादक– डॉ भदंत आनंद कौशल्यायन
2– मोहन सिंह 'ड्रा भीम राव अम्बेडकर व्यक्तित्व के कुछ पहलू'
3– बाबा भीम राव अम्बेडकर, शुद्र कौन है,
4– डॉ अंबेडकर राइटिंग एंड स्पीचेज वाल्यूम 3
5– भगवान दास, " भारत मे बौद्ध का पुनर्जागरणं एवं समस्याएं, दलित लिवरेशन टुडे, मई 1996 लखनऊ
6– डॉ वी0 आर0 अंबेडकर, "सोशल जस्टिस एंड पॉलिटिकल सेफगार्ड ऑफ डिप्रेस्ड क्लासेस"
7– जाति विनाश, बाबा भीम राव अम्बेडकर, अनुदित राजकिशोर
8– भगवान बुद्ध और उनका धम्म, डॉ भीम राव अम्बेडकर
9– " डॉ0 अंबेडकर का मत परिवर्तन और बौद्ध धर्म' विजय कुमार (निदेशक) विश्व सम्वाद केंद्र, देहरादून
10– 'अंबेडकर बुद्धिजम' क्रिस्टोफर एस क्वीन